DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

कारक प्रकरण

Part -3

LIVE 10-05-2024 05:00 PM

चतुर्थी

Mon
2 बजे
साहित्य

5 बजे
व्याकरण

कल शाम 5 बजे
भाषा - विज्ञान
प्रश्नोत्तरी 40

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

करण कारक तृतीया विभक्ति

सूत्रः "साधकतमं करणम्" (1/4/ 42)

वृत्तिः क्रियासिद्धौ यत् प्रकृष्टोपकारकं विवक्षितम् तत् साधकतमं कारकं करणसंज्ञं भवति ।

सूत्रार्थः कर्ता द्वारा क्रिया की सिद्धि में जो अत्यन्त उपकार (साधकतम / साधन) कारक होता है, वह करणसंज्ञक होता है।

उदा० – सीता जलेन मुखं प्रक्षालयति
तृतीया

सूत्रः "कर्तृकरणयोस्तृतीया" (2/3/18)

वृत्तिः अनभिहिते कर्तरि करणे च तृतीया स्यात् ।

सूत्रार्थः अनुक्त कर्ता (कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में) और करण 1 तृतीया विभक्ति होती है।

जैसेः

रामः बाणेन रावणं हतवान् ।

(राम ने बाण से रावण को मारा। = बाण साधन है।)

यहाँ राम रावण को मारने के लिए बाण (साधन) की सहायता लेता है, अतः बाण (साधन) में तृतीया विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

कर्म:- रामेण बाणेन रावणः हतः

राम के द्वारा बाण से रावण मारा गया

अन्य उदाहरणः

बालकः कन्दुकेन क्रीडति ।

(बालक गेंद (कन्दुक) से खेलता है। गेंद साधन है ।)

श्यामः कलमेन लिखति ।

(श्याम कलम से लिखता है। = कलम साधन है।)

सः बसयानेन गच्छति।

(वह बसयान (Bus) से जाता है। = बस साधन है।)

सूत्रः "सहयुक्तेऽप्रधाने" (2/3/19)

वृत्तिः सहार्थेन युक्ते अप्रधाने तृतीया स्यात् ।

सूत्रार्थः सह अर्थ वाले (सह, साकं, सार्धं, समं, युगपत्) पदों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। इसमें वाक्य में जिस शब्द में 'के साथ' अप्रधान मे जुड़ा होता है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है।

जैसेः

पिता पुत्रेण सह आगतः ।

(पिता पुत्र के साथ आया।)

सीता रामेण सह वनं गच्छति ।

(सीता राम के साथ वन जाती है।)

गदया सार्धं भीमः गच्छति।

(गदा के साथ भीम जाता है।)

शिक्षकः छात्रैः सार्धं भ्रमति ।

(शिक्षक छात्रों के साथ घूमता है।)

शशिना सह कौमुदी आगच्छति ।

(चाँद के साथ चाँदनी आती है)

रामेण समं लक्ष्मणः गच्छति ।

(राम के साथ लक्ष्मण जाता है।)

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

सूत्रः "येनाङ्गविकारः" (2/3/20)

वृत्तिः येनाङ्गेन विकृतेन अगिनः विकारः लक्ष्यते, ततः तृतीया स्यात् । र्थ: जब किसी विकृत अंग के द्वारा शरीर में विकार दिखाई दे तो उस विकृत अंग में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे:

से

सकूनी अक्ष्णा काणः आसीत् ।

(सकूनी **आंख** से काणा था ।)

मनोजः शिरसा खल्वाटः अस्ति ।

(मनोज **सिर** से गंजा है |)

महेशः पादेन खञ्जः

सुरेशः हस्तेन लुञ्जः

गीता नेत्राभ्याम् अन्धः

देवदत्तः पादेन खञ्जः अस्ति।

(देवदत्त पैर से लंगड़ा है |)

विष्णुः शरीरेण वामनः अस्ति ।

(विष्णु शरीर से बौना है |)

मन्थरा पृष्ठेन कुब्जा आसीत् ।

(मन्थरा पीठ से कूबड़ी थी ।)

राजेशः कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति ।

(राजेश दोनों कानों से बहरा है ।)

सूत्रः " इत्थंभूतलक्षणे" (2/3/21)

वृत्तिः कञ्चित् प्रकारं प्राप्तस्य लक्षणे तृतीया स्यात् ।

सूत्रार्थः 'वह ऐसा है' या 'यह इस प्रकार का हैं' इस प्रकार का अर्थ को बताने वाले लक्षण (चिह्न) में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसेः लक्षण में तृतीया

सः वेषेण साधुः / वर्तते ।

(वह वेश से साधु / लगता है।)

सः जटाभिः तापसः

लक्षण में तृतीया।

भीमः आकृत्या शूरः ।

(भीम आकृति से शूर लगता है।)

जटाभिः तापसः ।

(जटाओं से तपस्वी लगता है।)

चेतनः शिखया पण्डितः ।

(चेतन शिखा से पण्डित प्रतीत होता है।)

सूत्र: "हेतौ" (2/3/23)

वृत्तिः हेत्वर्थे तृतीया स्यात् ।

सूत्रार्थ: हेतु के अर्थ में तृतीया विभक्ति होती हैं। यहाँ हेतु का अर्थ कारण होता है। यह किसी भी कार्य के होने का निमित्त होता है।

जैसे:

मृत्तिकया: घटः ।

(मिट्टी के कारण घड़ा या मिट्टी से बना घड़ा ।)

अहं अध्ययनेन अत्र वसामि ।

हेतौ

तन्तुभिः वस्त्रम् ।

(धागों के कारण वस्त्र है। या धागों से बना वस्त्र ।)

दण्डेन घटः ।

(दण्ड / डण्डे के कारण घड़ा है। दण्ड से बना घड़ा ।)

सः अध्ययनेन वसति ।

(वह अध्ययन के कारण रहता है।)

भृत्यः अन्नेन वसति ।

(नौकर अन्न के कारण रहता है।)

सूत्र - साधकतमं करणम् 1 /4/42

वृत्ति - क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं कारकं करणसंज्ञं स्यात् ।

पदविश्लेषण साधकतमं प्रथमान्तं, करणं प्रथमान्तं द्विपदमिदं सूत्रम् । साधयतीति साधकम्, अतिशयितं साधकं साधकतमम् ।

सूत्रार्थ - क्रिया की सिद्धि में अत्यन्त सहायक कारक की करणसंज्ञा होती है।

सूत्र - कर्तृकरणयोस्तृतीया 2/3/18

वृत्ति – अनभिहिते कर्तरि करणे च तृतीया स्यात् । रामेण बाणेन हतो बाली । "।

पदविश्लेषण- कर्ता च करणं च कर्तृकरणे, तयोः कर्तृकरणयोः सप्तम्यन्तं तृतीया प्रथमान्तं द्विपदमिदं सूत्रम् ।

सूत्रार्थ – अनुक्त कर्ता और करण में तृतीया विभक्ति होती है । इस सूत्र में अनभिहिते का अधिकार है। अनभिहितं का अर्थ है अनुक्ते अर्थात् अनुक्त कर्ता और अनुक्त करण में तृतीया विभक्ति होती है। अधिकृत अनभिहिते पद को वचनविपरिणाम के द्वारा द्विवचनान्त अनभिहितयोः बना लिया जाता है। अतः अनभिहित का कर्ता और करण दोनों के साथ अन्वय होता है ।

उदाहरण :- 'रामेण बाणेन हतो बाली' (राम के द्वारा बाण से बाली मारा गया) । यहाँ पर हननक्रिया में स्वतन्त्रतया विवक्षित होने से "स्वतन्त्रः कर्ता" के अनुसार राम कर्ता है और हननक्रिया में अत्यन्त सहायक होने से "साधकतमं करणम्" से बाण की करणसंज्ञा होती है । हतः में 'हन्' धातु से कर्म अर्थ में 'क्त' प्रत्यय होकर हतः बना है । कर्म अर्थ में प्रत्यय होने के कारण कर्म उक्त हुआ और कर्ता अनुक्त हुआ । अतः "कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से अनुक्त कर्ता राम और करण बाण में तृतीयाविभक्ति होकर रामेण बाणेन हतो बाली वाक्य सिद्ध होता है। अतएव 'रामकर्तृक- बाणकरणक - हिंसाक्रियाविषयो बाली' शब्दबोध होता है।

सूत्र - दिवः कर्म च 1 /4/43

वृत्ति - दिवः साधकतमं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात्, चात् करणसंज्ञम् । अक्षैरक्षान् वा दीव्यति ।

पदविश्लेषण – दिवः षष्ठ्यन्तं कर्म प्रथमान्तं, चाव्ययम् । कारके का अधिकार है और साधकतमं करणम् से करणम् की अनुवृत्तिआती है ।

सूत्रार्थ - दिव् धातु के साधकतम कारक की कर्मसंज्ञा होती है और चकार ग्रहण करने से करणसंज्ञा भी होती है

उदाहरण :- **'अक्षैरक्षान् वा दीव्यति'** (पासों से खेलता है)। यहाॅ अक्षैः यह करणतृतीया और अक्षान् यह कर्मद्वितीया है । "दिवः कर्म च सूत्र से कर्मसंज्ञा एवं करणसंज्ञा होकर द्वितीया और तृतीयाविभक्ति होती हैं । अतः 'अक्षैः अक्षान् वा दीव्यति' वाक्य सिद्ध होता है ।

अक्षैः दीव्यति (साधकतमं करणम्)

अक्षान् दीव्यति

सूत्र अपवर्गे तृतीया 2/3/6

वृत्ति - अपवर्गः फलप्राप्तिः, तस्यां द्योत्यायां कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे तृतीया स्यात् । अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः । अपवर्गे किम् ? मासमधीतो नायातः ।

पदविश्लेषण - अपवर्गे सप्तम्यन्तं तृतीया प्रथमान्तम् । कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे सूत्र की अनुवृत्तिआती है और अपवर्ग शब्द का अर्थ है फलप्राप्ति ।

-

सूत्रार्थ- फलप्राप्ति अर्थ द्योत्य होने पर काल और अध्व के वाचक शब्दों के अत्यन्तसंयोग में तृतीया विभक्ति होती है।

उदाहरण :- 'अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः' (दिन भर में या कोस भर चलने में अनुवाक पढकर हृदयांगम कर लिया) । तात्पर्य यह है कि अनुवाक पढने के साथ याद भी हो गया अर्थात् फल की प्राप्ति हो गयी । फलप्राप्ति होने पर ही 'अपवर्गे तृतीया' सूत्र से तृतीयाविभक्ति होकर अहन् शब्द और क्रोश शब्द के तृतीया में अह्ना अनुवाकोऽधीतः क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः ये दोनों वाक्य सिद्ध होते हैं ।

अपवर्गे किम्? 'मासमधीतो नायातः'। प्रकृतसूत्र में अपवर्गे पद का क्या प्रयोजन है? अपवर्गे का प्रयोजन है कि क्रिया के बाद फल की प्राप्ति हो तभी तृतीयाविभक्ति होती है अन्यथा फल की प्राप्ति नहीं होगी तो तृतीयाविभक्ति भी नहीं होगी । मासमधीतो नायातः (महीने भर अध्ययन किया लेकिन नहीं आया)

। यहाँ पर महीने भर अध्ययन करने पर भी हृदयांगम नहीं हुआ अर्थात् फल की प्राप्ति नहीं हुयी । अतः तृतीयाविभक्ति न होकर द्वितीयाविभक्ति हुयी ।

सूत्र - सहयुक्तेऽप्रधाने 2/3/19

वृत्ति - सहार्थेन युक्तेऽप्रधाने तृतीया स्यात् । पुत्रेण सहागतः पिता । एवं साकं सार्धं समं योगेऽपि । विनापि तद्योगं तृतीया, 'वृद्धो यूना' इत्यादि निर्देशात् ।

पदविश्लेषण -सहयुक्ते सप्तम्यन्तम्, अप्रधाने सप्तम्यन्तम् । कर्तृकरणयोस्तृतीया से तृतीया की अनुवृत्तिआती है। सहेन युक्तः सः सहयुक्तस्तस्मिन् सहयुक्ते, तृतीयातत्पुरुषः । न प्रधानमप्रधानं तस्मिन् अप्रधानेः ।

सूत्रार्थ - सह तथा सहार्थक (साकम्, सार्धम्, समम् आदि) शब्दों के योग में क्रिया से अन्वित होते हुए भी जो अप्रधान हो उसमें तृतीया विभक्ति होती है। युक्त शब्द के द्वारा वाचक अर्थ गृहीत होता है। फलतः सहयुक्ते का अर्थ है- सहार्थक शब्दों के योग में। प्रधान और अप्रधान का निर्णय क्रिया के साथ अन्वय से होता है। क्रिया के साथ आर्थिक सम्बन्ध होते हुए शब्द- सम्बन्ध भी जिसका होता है, उसे प्रधान और तद्भिन्न अप्रधान कहते हैं।

उदाहरण :- 'पुत्रेण सहागतः पिता' (पिता पुत्र के साथ आया)। यहाँ पर पिता की प्रधानता है क्योंकि मुख्य रूप से आगमन पिता का हो रहा है। पिता का क्रिया के साथ शाब्दिक एवं आर्थिक दोनों सम्बन्ध हैं । अप्रधान पुत्र में 'सहयुक्तेऽप्रधाने' सूत्र से तृतीयाविभक्ति होकर 'पुत्रेण सह आगतः' वाक्य बनता है ।

एवं साकं सार्धं समं योगेऽपि । प्रकृतसूत्र में युक्त से शब्द सह - शब्द के अर्थ वाले शब्दों का भी ग्रहण किया जाता है । अतः साकं, सार्धं, समम् आदि शब्दों के योग में भी तृतीया विभक्ति होती है। कहीं-कहीं सह आदि योग के बिना भी तृतीयाविभक्ति होती है । "वृद्धो यूना" इत्यादि पाणिनीय प्रयोगों के निर्देश से । यहाँ युवन् शब्द के तृतीया में यूना बनता है । अतः सह शब्द का अध्याहार किया जाता है।